UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 88-90

''भारतीय शिक्षा पद्वति एवं जीवन मूल्य''

डॉ.रचना बजाज
(निदेशक, इंदौर इंदिरा इंस्टीट्यूट ऑफ बिसनेज)

सारांश :–
नैतिक मूल्य पहचान है भारतीय संस्कृति की सभ्यता की, पुरखों से मिली अनमोल धरोहर हैं ये हमारें अस्तित्व और विकास का प्रतीक है नैतिक एवं मानवीय मूल्य। कहते हुए अफसोस होता है कि नई पीढी इस अनुपम व अनमोल धरोहर को खोती जा रही है और पाश चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, तकनीकि का दुर्पयोग ही नही हमारी मौजुदा शिक्षा प्रणाली भी इस नैतिक ह्रास व मूल्यों में पतन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। विश्व गुरू कहलाये जाने का जो सौभाग्य व ताज हमारे सिर था उसका सर्वोपरि कारण ही यह था कि हमारी प्राचीन शिक्षा पद्वति नैतिकता से ओत–प्रोत व खरे मूल्यों पर आधारित थी तो सिक्के का दूसरा पहलू भी यही है कि जैसे–जैसे शिक्षा पद्वति मूल्यों व नैतिकता के व्यावहारिक पाठ्यक्रम से विलय होती गई वैसे–वैसे हमारा भी पतन होता गया। चूँकि जनसंख्या के लिहाज से भारत विश्व का दूसरा बड़ा देश है तो वैश्विक स्तर पर अपने आप को साबित करने के लिए यह अति–आवश यक है कि हमारे युवा नैतिक व चारित्रिक रूप से सुदृढ़, सक्षम व समर्थ हो क्योंकि लिजलिजे व कमजोर आत्मबल वाले युवा राश्ट्र की तरक्की में सहयोगी नही हो सकते किंतु यह तभी संभव है जबकि हमारी विद्यालयीन ही नहीं महाविद्यालयीन व उच्च शिक्षा पद्वति में मूल्यों व नैतिकता को व्यावहारिक स्थान दिया गया हो। वास्तव में उच्च शि ाक्षा में सिर्फ व्यावसायिक एवं तकनीकि ज्ञान देकर हम अपना संपूर्ण विकास नहीं कर सकते जबकि जीवन मूल्यों एवं रोजगार उन्मूलक पाठ्यक्रम को जोडकर संपूर्ण विकास का स्वप्न संभव है।

*कूँजी **शब्द** धरोहर, संस्कृति, वैश्विक, उच्च शिक्षा, नैतिकता*

प्रस्तावना

नैतिक मूल्य पहचान है भारतीय संस्कृति की सभ्यता की, पुरखों से मिली अनमोल धरोहर हैं ये हमारें अस्तित्व और विकास का प्रतीक है नैतिक एवं मानवीय मूल्य। विश्व बंधुतत्व एवं सहअस्तित्व की भावना से ओत–प्रोत संपूर्ण जगत को मैत्री, भाईचारा एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा देने वाली हमारी प्राचीन संस्कृति का ही यह सुपरिणाम है कि यवनों, मूगलो और अंग्रेजों के हजारों हमलों और सैकडों वर्शो की दासता के बावजुद हमारा अस्तित्व बरकरार है किंतु क्या यहीं नैतिकता एवं मूल्य हमारी युवा व आधुनिक पीढी में मौजुद है? कहते हुए अफसोस होता है कि नई पीढी इस अनुपम व अनमोल धरोहर को खोती जा रही है और पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, तकनीकि का दुर्पयोग ही नही हमारी मौजुदा शिक्षा प्रणाली भी इस नैतिक ह्रास व मूल्यों में पतन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। विश व गुरू कहलाये जाने का जो सौभाग्य व ताज हमारे सिर था उसका सर्वोपरि कारण ही यह था कि हमारी प्राचीन शि ाक्षा पद्वति नैतिकता से ओत–प्रोत व खरे मूल्यों पर आधारित थी तो सिक्के का दूसरा पहलू भी यही है कि जैसे–जैसे शिक्षा पद्वति मूल्यों व नैतिकता के व्यावहारिक पाठ्यक्रम से विलय होती गई वैसे–वैसे हमारा भी पतन होता गया। चूँकि जनसंख्या के लिहाज से भारत विश्व का दूसरा बड़ा देश है तो वैश्विक स्तर पर अपने आप को साबित करने के लिए यह अति–आवश्यक है कि हमारे युवा नैतिक व चारित्रिक रूप से सुदृढ़, सक्षम व समर्थ हो क्योंकि लिजलिजे व कमजोर आत्मबल वाले

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 88-90

युवा राश्ट्र की तरक्की में सहयोगी नही हो सकते किंतु यह तभी संभव है जबकि हमारी विद्यालयीन ही नहीं महाविद्यालयीन व उच्च शिक्षा पद्वति में मूल्यों व नैतिकता को व्यावहारिक स्थान दिया गया हो। वास्तव में उच्च शिक्षा में सिर्फ व्यावसायिक एवं तकनीकि ज्ञान देकर हम अपना संपूर्ण विकास नहीं कर सकते जबकि जीवन मूल्यों एवं रोजगार उन्मूलक पाठ्यक्रम को जोडकर संपूर्ण विकास का स्वप्न संभव है।

शोधपत्र के उद्देश्यः–

शोधपत्र के प्रमुख उद्देय हैः–

1. वर्तमान में उच्च पद्वति की वास्तविक स्थिति को जानना
2. उच्च शिक्षा पद्वति में जीवन मूल्यों का महत्व एवं योगदान
3. उच्च शिक्षा पद्वति में नैतिक व मानवीय मूल्यों के समावेश की संभावना व सुदृढ़ बनाने हेतु सुझाव

शोध प्रविधि एवं संकलनः–

प्रस्तुत **शो**ध पत्र में विभिन्न संदर्भ ग्रंथों, समाचार–पत्र पत्रिकाओं **शो**धपत्रों, लेखों आदि से जानकारी व समंक जुटाएँ गये है।

उच्च–शिक्षा :– वर्तमान परिदृश्य

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्वति व्यावहारिकता के धरातल पर बेहद कमजोर व सतही साबित हो रही है यह छात्रों को मात्र सूचना प्रदान करने वाली मशीन बन गई है जहॉ वास्तविक ज्ञान के लिए कोई स्थान नही हैं। कुछ विशेश बिंदुओं निम्नलिखित है।

1. धन ही ध्येयः–

इस पीढ़ी ने अपनी शिक्षा पद्वति से यही सिखा की सफल वहीं है जो भरपूर पैसा कमा रहा है जिसके पास धन नही वह असफल ही नहीं अस्तित्वहीन भी है। फैशन, पार्टीया, गैजैट्स गाडियां, आलीशान मकान और पद, प्रतिश्ठा व पॉवर की भूखी ये पीढ़ी उच्च शिक्षा हासिल कर सिर्फ और सिर्फ धन ही कमाना चाहती है, बुद्विमता, सहयोग और मदद शब्द इनकी डिक्शनरी में से गायब हो चुके है।

2. **नेतृत्व का अभावः–**

वर्तमान शिक्षा पद्वति मैधावी से मैधावी विद्यार्थियों को भी अनुसरणकर्ता बनाती है और लीडरशिप क्वालिटी को उभारने में असमर्थ है। मात्र नौकरियों पर आश्रित युवा अच्छा उद्वमी बन अन्य लोगों का रोजगार देने में असमर्थ है।

3. **पूर्ण व्यक्तित्व विकास नहीं :–**

वर्तमान उच्च शि ाक्षा किसी भी छात्र के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करने में असक्षम है। यह शिक्षा न तो शोध और न ही ज्ञान पर आधारित है अपितु सिर्फ सूचनाओं का भंडारण मात्र है विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निखारने के, उनकी बुद्विमता को बढाने के लिए कोई टुल नही है। छात्र मात्र अंक कमाने के मशीन बन गये है।

सिलेबस और कोर्स पूर्ण करना ही ध्येय है जबकि उस सिलेबस का व्यक्तित्व विकास में क्या योगदान है यह न छात्र जानना चाहता है न ही शिक्षक बताते है।

सिर्फ रट्टा मार के परिक्षाऍ पास करना और सर्वाधिक अंक लाने का तनाव वर्तमान शिक्षा पद्वति का वास्तविक स्वरूप है।

जीवन मूल्यों की महत्ता और उच्च शिक्षा में योगदानः–

एक बच्चा एक विद्यार्थी कोरे कागज की तरह होता है, वास्तव में बचपन से ही उस कागज पर सही उच्च मानवीय व जीवन मूल्यों को लिख दिया जाए तो ताउम्र उसकी छाप अंकित रहती है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 88-90

इस गलाकार प्रतिस्पर्धा के युग में हमारी व्यवस्था ने विद्यार्थियों के हाथों में मॅहगे मोबाईल लेपटॉप, गाडिया और गैजेट्स तो थमा दिए मगर इनका मूल्य आधारित उचित व बुद्विमत्ता पूर्ण उपयोग करना यह शि ाक्षा व्यवस्था नही समझा पाई।

सैकडों हजारों की संख्या में महाविद्यार्थियों और विश ववि़द्यालय की स्थापना हुई और लाखों की तादाद में विद्यार्थी उनमें पढ भी रहे हे पर सच में उन्हें सुसंस्कृत व सभ्य निवासी बनाने में क्या कामयाब हुई हमारी शि ाक्षा व्यवस्था? क्या भारत की महान विरासत एवं गौरवश ाली परम्पराओं को हमारे विद्यार्थी जानते और समझते है उनके संस्कारों से उन्हें अपनापन व लगाव है? क्या नैतिक शि ाक्षा के नाम पर सम्मिलित किये गयो पाठ्यक्रम मात्र छलावा और ठकोसला नहीं है? उपर्युक्त प्रश नों के अलावा भी सैकडों प्रश न हमारे मुॅह बाये खडे है। और जब तक हमारी शि ाक्षा व्यवस्था में शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ–2 नैतिक व मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत पाठ्यक्रम को वास्तविक रूप में सम्मिलित नहीं किया जाता यह शि ाक्षा पद्वति अपूर्ण ही रहेगी।

नैतिक एवं जीवन मूल्यों को पाठयक्रम में सम्मिलित करने मात्र से हम विद्यार्थियों के जीवन कोई परिवर्तन नही ला सकते जब तक कि हम वास्तविक रूप में उन्हें नैतिक मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, कर्मठता, मेहनत, लगन अनुशासन, और भावनाओं का जीवन में कितना महत्व है और इनके बिना जीवन कितना अर्थहीन है नही समझाते और इसका एक मात्र रास्ता है हमारे अपने आचरण एवं अपने घर से इसकी ुरूआत करे और फिर विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में इनकी शिक्षा सुनिश्चित की जाए।

उपसंहारः–

वर्तमान शि ाक्षा प्रणाली सिर्फ अंकीय प्रतिस्पर्धा पर आधारित है और उसी को बढावा देती है वहां मूल्यों संवेदनाओं और संस्कारों के लिए न तो अंक है न ही स्थान । किंतु राश ट्र के संपूर्ण एवं सुदृढ़ विकास के लिए आवश यक है कि विद्यार्थी शैक्षणिक शारिरिक सक्षम हो तभी वे समाज व राश ट्र के लिए स्वर्णिम भविश य तय कर सकते है। अतः यह नितातः आवश्यक है कि हमारी शि ाक्षा व्यवस्था मूल्य के साथ–2 मूल्यों पर भी आधारित हो।

संदर्भ ग्रंथः–

1- वार्शिक प्रतिवेदन– मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
2- समाचार पत्र
3- विभिन्न **शो**ध पत्र